

धर्म की ग्लानि होने पर ही परमात्मा का अवतरण

बुद्धि की जागरूकता से इंद्रियों के बहाव को रोका जा सकता है



रायपुर, चौबे कॉलोनी। दादी प्रकाशमणि जी के 'स्मृति-दिवस' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.सविता बहन।



इंदौर-छावनी। दादी प्रकाशमणि जी के 'स्मृति-दिवस' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन है आशिष गुप्ता, रतनलाल गुप्ता, ब्र.कु.हिमांशु बहन एवं ब्र.कु.सुमित्रा बहन।



उज्जैन। केंद्रीय जेल अधीक्षक संजय पांडे को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.मंजु बहन।



चरोदा, छ.ग। जी.आर.पी.टी.आई. योगेंद्र पांडे को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.रवि बहन।



राजेंद्र नगर। बी.ओ.आई. के बैंक मैनेजर अर्चना वर्मा को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.रक्षा बहन।



इंदौर, जती कॉलोनी। अग्निबाण समाचार पत्र के संपादक राजेश चलावत को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.छाया बहन।



रतलाम। विश्व को आध्यात्मिक ज्ञान की धारा से सींचते हुए संस्था के गौरवशाली 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसे सम्बोधित करते हुए राज्यमंत्री मनोहर ऊंटवाल ने कहा कि भगवान ने गीता में स्वयं यह वचन दिया है कि जब-जब धर्म की अति ग्लानि होती है तब-तब मैं अवतार लेता हूँ और प्रायः लुप्त आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करता हूँ। अभी वर्तमान समय गीता का ही युग चल रहा है जब भगवान स्वयं अवतरित होकर ब्रह्मा मुख से गीता का ज्ञान दे रहे हैं।

महंत गोपालदास ने कहा कि शांति की प्राप्ति के लिए मनुष्य कहां-कहां भटकता रहता है। जबकि उसे यह मालूम ही नहीं है कि शांति आत्मा का स्वधर्म है। नायब काजी अहमद

शांति आध्यात्मिकता से प्राप्त होती है भौतिकता से नहीं



सिवनी। शिविर को सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार प्रो. कमल दीक्षित एवं मंचासीन हैं तेजबली सिंह ठाकुर, ब्र.कु.गीता बहन तथा अम।

सिवनी। यदि मनुष्य को भौतिक साधनों से शांति प्राप्त होती तो पाश्चात्य देश के लोग शांति प्राप्त कर चुके होते लेकिन वे भी शांति की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक जीवन शैली को अपना रहे हैं और अपना जीवन मूल्यनिष्ठ बना रहे हैं।

उक्त उद्गार ब्र.कु.गीता बहन ने 'आंतरिक शांति एवं चिंता रहित जीवन शैली' विषय पर आयोजित शिविर का उद्घाटन करते हुए व्यक्त की। उन्होंने कहा कि मनुष्य का जीवन बहुत ही अमूल्य है उसे व्यर्थ में गंवाना बुद्धिमानी नहीं है। आज मनुष्य यही चाहता है कि वह जो चाहे वही हो, उसकी यही जिद उसे दुःख व अशांति से जीवन जीने पर विवश कर रही है। उन्होंने कहा कि इस शिविर का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को मूल्यनिष्ठ बनाना व जीवन जीने की कला सीखना है।

वरिष्ठ पत्रकार प्रो. कमल दीक्षित ने कहा कि आध्यात्मिकता सुनने की चीज नहीं है,

अली ने कहा कि हर धर्म में नैतिकता, शिक्षा और मूल्यों को ही सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। सभी धर्म एक ही हैं और वे हमें आपस में मिल-जुलकर रहना सीखते हैं। ज्ञानी मानसिंह ने कहा कि यह संस्था पिछले 75 वर्षों से मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में संलग्न है। यहां दी जा रही शिक्षा से लोगों के जीवन में सच्चाई और प्रेम की भावना आती है। डॉ.प्रभा मिश्रा ने कहा कि श्वेत क्रांति, हरित क्रांति के बाद अब आध्यात्मिक क्रांति ही विश्व में शांति स्थापन कर सकती है।

इस कार्यक्रम को विधायक पारस सकलेंचा, फादर जॉन पीटर सहित अनेक गणमान्य लोगों ने भी सम्बोधित किया। स्वागत भाषण रतलाम सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु.सविता बहन ने दिया व मंच का कुशल संचालन इंदौर की ब्र.कु.अनिता बहन ने किया।

अच्छे और बुरे, दोनों प्रकार के विचार बनाने की शक्ति हर मनुष्य में होती है। सही और गलत का अंतर अधिकांश लोगों को मालूम भी होता है, लेकिन फिर भी रूचि हावी हो जाती है और वे इस फर्क के महत्व को भूल जाते हैं। कई बार हमें महसूस होता है कि जो काम हमें करना चाहिए या जिस नियम से हम बंधे हैं, उसका पालन नहीं करते। पछतावा भी होता है, फिर भी गलत करते ही जाते हैं। जिस प्रकार दफ्तरों में कुछ विभाग होते हैं, विभाग प्रमुख होते हैं, सबका अपना-अपना दायित्व होता है।

आप किसी भी भूमिका में हों, मामला दायित्व बोध का है। इसी बात को आध्यात्मिक दृष्टि से देखें। अध्यात्म में जिस तरह से व्यवस्था

अध्यात्म में जिस तरह से व्यवस्था बाहर है, वैसी ही व्यवस्था भीतर भी होती है। बाहर की व्यवस्था से परिस्थिति बदलती है और भीतर की व्यवस्था को जान लेने से मनःस्थिति बदल जाती है।

बाहर है, वैसी ही व्यवस्था भीतर भी होती है। बाहर की व्यवस्था से परिस्थिति बदलती है और भीतर की व्यवस्था को जान लेने से मनःस्थिति बदल जाती है। जिसका मनोस्थिति पर नियंत्रण है, वह बाहर की स्थिति पर ज्यादा लगाम रख सकेगा। थोड़ा भीतर की व्यवस्था को जानें। शरीर, मन और बुद्धि इन तीनों पर हमें अलग-अलग स्थितियों में नियंत्रण करना आना चाहिए। मन अपने वेग के लिए जाना जाता है, इसीलिए वह इंद्रियों पर सवार रहता है। इंद्रियां सदैव सुख चाहती हैं, भोग चाहती हैं। मन और इंद्रियां मिलीं कि उनकी तेज गति के पीछे बुद्धि भी बहने लगती है। ऐसी स्थिति में बुद्धि का काम यह चेतावनी देना था कि बहुत अधिक मिठाई न खा ली जाए, क्योंकि स्वाद में भीटी है, पर पेट में जाकर परिणाम दूसरा हो सकता है। जहां बुद्धि को चेतावनी देकर रोकना था, वह मन के साथ मिल जाती है और मन पहले से मिठाई के साथ घुला हुआ था।

यहीं से व्यक्तित्व में भटकाव आता है। मिठाई वाली बात तो एक उदाहरण है। ऐसा कई अलग-अलग परिस्थितियों और लोगों के साथ होता रहता है। इसलिए हमें मन की शक्ति को अपने अधिकार से निष्क्रिय करना होगा, इंद्रियों के बहाव को रोकना होगा और बुद्धि को जाग्रत रखना होगा। भीतर की व्यवस्था संभली तो बाहर का सिस्टम अपने आप ठीक हो जायेगा।